SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महात्मा गांधी की नई तालीमः शिक्षा का समग्र दृष्टिकोण

सुरेखा जवादे, Ph. D., शिक्षा विभाग
सेंट थॉमस महाविद्यालय, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुरेखा जवादे, Ph. D.
E-mail : surekhabhilaistc@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 07/09/2024
Revised on : 08/11/2024
Accepted on : 18/11/2024
Overall Similarity : 00% on 09/11/2024

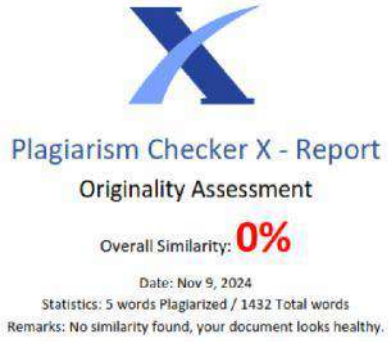

शोध सार

महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित ''नई तालीम'' (नैतिक शिक्षा) एक समग्र शिक्षा दृष्टिकोण है, जिसका उद्देश्य व्यक्तियों का सर्वांगीण विकास करना था। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा केवल साक्षरता प्रदान करने का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, कौशल विकास, आत्मनिर्भरता और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का साधन भी है। नई तालीम का दृष्टिकोण पारंपरिक शिक्षा पद्धति से भिन्न है, जो मुख्य रूप से पुस्तकों और परीक्षाओं पर आधारित होती है। गांधी जी का जोर शिक्षा को जीवन के साथ जोड़ने पर था, ताकि विद्यार्थी न केवल सैद्धांतिक ज्ञान अर्जित करें, बल्कि व्यवहारिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी प्रबल बनें।

मुख्य शब्द

बुनियादी शिक्षा, आत्मनिर्भरता, औपनिवेशिक, अनुयायी, जागरूकता,

प्रस्तावना

महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित ''नई तालीम'' एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसका उद्देश्य केवल साक्षरता और ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों का समग्र विकास करना है। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य जीवन में नैतिकता, आत्मनिर्भरता, और व्यवहारिकता को स्थापित करना होना चाहिए। उनके अनुसार, शिक्षा न केवल रोजगार का माध्यम है, बल्कि यह समाज के प्रति उत्तरदायित्व, सेवा भावना, और मानवता को समझने का एक साधन भी है। नई तालीम महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित एक शैक्षिक दृष्टिकोण है, जिसका उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को औपनिवेशिक ढांचे से हटाकर एक नई दिशा देना था। इसे ''बुनियादी शिक्षा'' के नाम से भी जाना जाता है। नई तालीम का मुख्य सिद्धांत यह था कि शिक्षा सिर्फ बौद्धिक विकास तक सीमित न रहे,

बल्कि इसमें श्रम, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारियों का समावेश हो।

नई तालीम या बुनियादी शिक्षा की परिभाषा विभिन्न दार्शनिकों और शिक्षाविदों द्वारा अलग–अलग दृष्टिकोणों से की गई है। प्रमुख दार्शनिकों के विचार इस प्रकार हैं:

महात्मा गांधी जी नई तालीम के संस्थापक थे। उनके अनुसार, ''शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के शरीर, मन और आत्मा का संतुलित विकास है।'' वे मानते थे कि शिक्षा केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसका उद्देश्य बच्चों को आत्मनिर्भर, नैतिक और जिम्मेदार नागरिक बनाना है। उनका सिद्धांत ''श्रम से शिक्षा'' था, जिसमें कार्य के माध्यम से सीखने पर जोर दिया गया। गांधी जी के अनुयायी विनोबा भावे ने भी नई तालीम का समर्थन किया। उनके अनुसार, ''शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि नैतिक और आत्मिक विकास भी होना चाहिए।''

रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार, ''शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास नहीं है, बल्कि समाज की सामूहिक भलाई के प्रति जागरूकता भी पैदा करना है।''

पश्चिमी दार्शनिक जॉन ड्यूई के विचार गांधी जी की नई तालीम पर प्रभाव डालते हैं। ड्यूई के अनुसार, ''शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें बच्चों की सक्रिय भागीदारी जरूरी है।'' उनका मानना था कि शिक्षा जीवन का अभिन्न हिस्सा होनी चाहिए, न कि केवल औपचारिक ज्ञान का माध्यम। विचारों से स्पष्ट है कि नई तालीम का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है, ताकि वे मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त होकर समाज में सकारात्मक योगदान दे सकें।

नई तालीम के मुख्य तत्व

1. शिक्षा को शारीरिक श्रम और कारीगरी के साथ जोड़ा गया, जिससे विद्यार्थी किताबों के साथ–साथ काम करने की कला भी सीखें।
2. स्वावलंबन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता विकसित करना था, ताकि वे अपने कौशल के आधार पर आजीविका कमा सकें।
3. गांधी जी का मानना था कि बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा मिलनी चाहिए, जिससे वे इसे आसानी से समझ सकें और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहें।
4. नई तालीम नैतिकता और समाज सेवा पर विशेष जोर देती थी, ताकि बच्चे जिम्मेदार नागरिक बन सकें।
5. शिक्षा जीवनभर सीखने की प्रक्रिया है। शिक्षा को एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा गया, जो जीवनभर चलती रहती है।

शिक्षा और समाज

नई तालीम के तहत शिक्षा और समाज के बीच एक गहरा संबंध स्थापित किया गया था। महात्मा गांधी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास नहीं, बल्कि समाज के लिए उपयोगी और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना भी है। शिक्षा और समाज के इस संबंध को समझा जा सकता है। नई तालीम का मकसद बच्चों को वास्तविक जीवन से जोड़ना था, ताकि वे समाज की आवश्यकताओं और समस्याओं को समझकर उनके समाधान में योगदान दे सकें।

शिक्षा को समाज में आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन बढ़ाने वाला होना चाहिए। नई तालीम के तहत बच्चों को शैक्षिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक कौशल सिखाए जाने चाहिए, जिससे वे आत्मनिर्भर बनकर समाज में अपनी भूमिका निभा सकें। गांधी जी हर वर्ग तक शिक्षा पहुँचाना चाहते थे, इसके माध्यम से नई तालीम का लक्ष्य समाज में समानता स्थापित करना था जिससे सामाजिक असमानता को कम किया जा सके।

नई तालीम में नैतिक और सामाजिक शिक्षा पर भी जोर दिया गया। बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ समाज

सेवा के कार्यों में शामिल किया जाना चाहिए, ताकि उनमें समाज के प्रति जिम्मेदारी और सेवा की भावना विकसित हो सके। नई तालीम में शिक्षा को नैतिकता और सामाजिक मूल्यों से जोड़ा गया, जैसे सत्य, अहिंसा, सहयोग, और सेवा। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को समाज में इन गुणों का पालन करने के लिए प्रेरित करना था। नई तालीम के तहत शिक्षा को समाज से जोड़ा गया, ताकि यह केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित न रहे, बल्कि समाज की बेहतरी और सामूहिक उन्नति में योगदान कर सके। गांधी जी के इस दृष्टिकोण ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण साधन बनाया।

नई तालीम और तत्कालीन शिक्षा प्रणाली

नई तालीम और तत्कालीन शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ थीं। नई तालीम का विकास महात्मा गांधी के दृष्टिकोण से हुआ, जिसमें दोनों की तुलना में, शिक्षा को व्यापक और समग्र दृष्टिकोण से देखा गया।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य

नई तालीम में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों का समग्र विकास करना है। यह बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक और नैतिक विकास पर जोर देती है।

तत्कालीन शिक्षा प्रणाली यह मुख्यतः बौद्धिक विकास पर केंद्रित थी, जिसमें परीक्षा और शैक्षणिक सफलता को प्राथमिकता दी जाती थी।

शिक्षण विधियाँ

नई तालीमः इसमें कार्य आधारित और अनुभव आधारित शिक्षण विधियाँ अपनाई गईं। बच्चों को व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से सिखाया जायेगा।

तत्कालीन शिक्षा प्रणाली यह मुख्यतः पुस्तक आधारित शिक्षा पर निर्भर थी, जिसमें थ्योरी को पढ़ने और याद करने पर जोर दिया जाता था।

भाषा का प्रयोग

नई तालीम में मातृभाषा में शिक्षा देने पर जोर दिया गया, जिससे बच्चे अपनी सांस्कृतिक पहचान को समझ सकें और बेहतर तरीके से सीख सकें।

तत्कालीन शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं पर अधिक ध्यान दिया गया, जिससे बच्चों की मातृभाषा के प्रति संवेदनशीलता कम हुई।

प्राकृतिक वातावरण

नई तालीम में शिक्षा को प्राकृतिक परिवेश में लाने का प्रयास किया गया। बच्चों को प्रकृति के निकट जाकर सीखने का अवसर दिया गया।

तत्कालीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षा मुख्यतः कक्षाओं में ही सीमित रहती थी, जहाँ छात्रों को चार दीवारों के भीतर ही पढ़ाया जाता था।

शिक्षक की भूमिका

नई तालीम में शिक्षक का कार्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि बच्चों का मार्गदर्शन और प्रेरणा देना भी था। शिक्षक बच्चों के व्यक्तिगत विकास में मदद करता था।

तत्कालीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का कार्य केवल पाठ पढ़ाना और परीक्षा की तैयारी कराना था। उनके पास छात्रों के व्यक्तिगत विकास का ध्यान रखने का समय नहीं था।

सामाजिक जिम्मेदारी

नई तालीम में इसका उद्देश्य बच्चों को समाज के प्रति जागरूक और जिम्मेदार बनाना था। सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दिया गया।

तत्कालीन शिक्षा प्रणाली में यह समाज से अधिकतर अलग थी, और छात्रों को सामाजिक जिम्मेदारी के बारे में कम सिखाया जाता था।

नैतिक शिक्षा

नई तालीम में नैतिकता और सामाजिक मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। बच्चों को सत्य, अहिंसा, और सहानुभूति के मूल्य सिखाए जाते थे।

तत्कालीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा पर कम ध्यान दिया गया, और पाठ्यक्रम का मुख्य ध्यान केवल शैक्षणिक विषयों पर था।

निष्कर्ष

नई तालीम ने शिक्षा को एक समग्र और व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखा, जो बच्चों को न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करता है, बल्कि उन्हें संवेदनशील, जिम्मेदार और सक्षम नागरिक बनाने में भी मदद करता है। इसके विपरीत, तत्कालीन शिक्षा प्रणाली में मुख्यतः ज्ञान के अर्जन पर ध्यान केंद्रित किया गया था, जिससे बच्चों का समग्र विकास सीमित हो गया था। नई तालीम का उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना था जो कौशल, आत्मनिर्भरता, और नैतिकता पर आधारित हो और विद्यार्थियों को समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनाए।

संदर्भ सूची

1. पांडेय, रामशकल (2013) *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा,* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 14।
2. राठौर, कुसुम लता (2013) *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. Sharma R.N. (2002) *Education in emerging Indian society,* Surjeet Publication, Kamla Nagar Delhi.
4. यादव, रामबली (2010) *उभरते हुए भारतीय सामाजिक– व्यवस्था में शिक्षा,* शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद।

****